2 अक्टूबर 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 9 सितम्बर से 18 सितम्बर, 2013 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन, दोपहर में श्रीमती पूजा भारिल्ल द्वारा पंचभाव विषय पर कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित परेशजी शास्त्री द्वारा दशधर्मों पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वी.वि. महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सुगन्ध दशमी के दिन अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा दशधर्म के विषयों पर आकर्षक सजीव झांकी लगाई गई, जिसे जयपुर के लगभग 2500-3000 लोगों ने देखा और उसकी भरपूर सराहना की। विधि-विधान के कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

सिद्धायतन-द्रोणगिरी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी द्वारा प्रात: वृहद् द्रव्यसंग्रह एवं दोपहर में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके पूर्व पण्डित रमेशचन्दजी लवाण द्वारा प्रात: एवं दोपहर में समयसार कलश पर एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवें अधिकार के आधार पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं ब्र. विमलाबेन द्वारा गुणस्थान प्रवेशिका की कक्षा ली गई। प्रात: दशलक्षण विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ पर ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा दोनों समय योगसार विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अमोलजी महाजन शास्त्री एवं स्थानीय विद्वान पण्डित विशालजी पाटनी के प्रवचनों का भी लाभ मिला। कार्यक्रम में समाज के सभी वर्गों के साधर्मीजनों ने लाभ लिया।

बेलगांव (कर्नाटक) : यहाँ ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रात: प्रवचनसार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में ब्र. प्रतीति दीदी देवलाली द्वारा 8 कर्म, ब्र. वासन्तीबेन देवलाली द्वारा पाँच भाव और ब्र. श्रद्धा दीदी देवलाली द्वारा द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर कक्षायें एवं पण्डित शीतलजी शेट्टी द्वारा प्रवचन हुआ। प्रात: दशलक्षण विधान पण्डित मिथुनजी शास्त्री द्वारा कराया गया।

दिल्ली (विश्वास नगर) : यहाँ पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के संवर अधिकार पर एवं सायंकाल क्रमबद्धपर्याय के आधार से क्रिया-परिणाम-अभिप्राय विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

अहमदाबाद (नवरंगपुरा) : यहाँ पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार एवं रात्रि में प्रवचनसार के ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के अतिरिक्त प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान एवं सायंकाल प्रतिक्रमण व जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन हुआ।

बीना (म.प्र.) : यहाँ पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार पर, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में प्रवचनोपरान्त पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

निसईजी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी धवल द्वारा प्रात: शून्य स्वभाव ग्रन्थ पर एवं सायंकाल ममलपाहुड के आधार से दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित बाहुबली शास्त्री का भी लाभ प्राप्त हुआ।

शिकागो (अमेरिका) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: 8-12 बजे तक अभिषेक एवं अर्थसहित पूजन का लाभ मिला। दोपहर में तीन लोक विषय पर आध्यात्मिक विवेचना के साथ कक्षा का आयोजन हुआ। सायंकाल विभिन्न जिनेन्द्र स्तुतियों के पाठ के बाद रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में तत्त्वचर्चा का आयोजन भी किया जाता था। इस अवसर पर शताधिक लोगों ने प्रत्यक्ष एवं इनके अतिरिक्त सैकड़ों लोगों ने मोबाइल कॉन्फ्रेन्सिंग एवं **Ustream** के माध्यम से ऑनलाइन प्रवचनों का लाभ लिया।

मुम्बई (दादर) : यहाँ पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

मुम्बई-जोगेश्वरी (ई) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा नयचक्र विषय पर प्रवचनों का

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

पंच परमेष्ठी विधान एवं शिलान्यास महोत्सव पत्रिका सोनागिर

पंच परमेष्ठी विधान एवं शिलान्यास महोत्सव पत्रिका सोनागिर

सम्पादकीय –

सबै दिन जात न एक समान

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जब समता को यह पता चला कि मोहनी जीवराज की उपेक्षा करने लगी है और उन्हें नाना प्रकार दुःख देने लगी है। बच्चे भी आवारा हो गये हैं। जिस लक्ष्मी पर जीवराज को बहुत गर्व था वह लक्ष्मी भी उससे रूठ गई है। जो कुछ कमाई की थी, उसमें से अधिकांश तो मोहनी की चौखट पर ही चढ़ गई। रही-सही यार लोग सुरापान में पी गये। जब बीमारी के इलाज की समस्या आई तो सभी दोस्त कन्नी काट गये।

समता ने देखा कि जीवराज अब दीन-हीन और असहाय हो गये हैं। उसे विचार आया कि 'ऐसा न हो कि वे निराश होकर कुछ अनर्थ कर लें। अतः उनकी खोज-खबर तो लेनी ही होगी। न केवल पति के नाते; बल्कि मानवता के नाते भी तो ऐसे लोगों का सहयोग करना अपना कर्तव्य है।' – ऐसा सोचते-विचारते उसके मन में उस पर दया आ गई। उसका हृदय द्रवित हो गया।

उसने सोचा – 'सुबह का भूला यदि शाम को भी सही ठिकाने पर आ जाता है तो वह भूला नहीं कहलाता।'

कुछ लोग प्रथम श्रेणी के ऐसे समझदार होते हैं कि दूसरों को ठोकर खाते देख स्वयं ठोकर खाने से बच जाते हैं। दूसरी श्रेणी में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो स्वयं ठोकर खाकर सीखते हैं तथा तीसरी श्रेणी के कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ठोकरों पर ठोकरें खाते हैं, फिर भी नहीं सीखते, संभलते – ऐसे लोगों को कोई नहीं बचा सकता।

समता ने मन ही मन कहा ''हमारे पतिदेव जीवराज प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण तो नहीं हो पाये; पर मुझे विश्वास है और आशा है कि वे दूसरी श्रेणी में तो उत्तीर्ण हो ही जायेंगे; अतः मैं उनसे मिलूँगी और बिना कुछ क्रिया-प्रतिक्रिया प्रगट किए, बिना कोई कम्पलेन्ट एवं कमेन्टस किए, उनके अहं को ठेस पहुँचाये बिना, उनकी मान मर्यादा का पूरा-पूरा ध्यान रखते हुए उन्हें पुनः घर वापिस लौटने हेतु विनम्र निवेदन करूँगी। उनसे कहूँगी – ''कोई बात नहीं, आप भूत को भूल जाइए गल्तियाँ होना मानवीय कमजोरी है, जो यदा-कदा अच्छे-अच्छों से भी हो जाती हैं।''

वह जीवराज से मिली, उन्हें देखते ही उसका गला भर आया, कंठ रुंध गया। उसने जो कुछ सोचा था, कुछ भी नहीं कह सकी। जीवराज भी अपनी करनी पर इतना पश्चाताप कर चुके थे कि उनके सारे पाप पहले ही पश्चाताप की आग में जलकर खाक हो गये थे, रहे-सहे अश्रुधारा में बह गये।

जिस तरह सोना आग में तपकर कुन्दन बन जाता है, जीवराज भी पश्चाताप की ज्वाला में तपकर मानसिक रूप से कुन्दन की तरह पवित्र हो गया था। आंखों ही आंखों में जीवराज और समता पुनः बिना किसी कंडीशन (शर्त) के एक आदर्श पति-पत्नी के रूप में शेष जीवन जीने के संकल्प के साथ वापिस निज घर लौट आये।

सुखद संयोग में जीवन यापन करते हुए उनके दो संतानें हुई। पुत्र का नाम रखा **विराग** और पुत्री का नामकरण किया ज्योत्सना। ''दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है'' इस लोकोक्ति के अनुसार जीवराज और समता ने अपनी दोनों सन्तानों को प्रारंभ से ही ऐसे सदाचार के संस्कार दिए ताकि वे सन्मार्ग से न भटक सकें।

जीवराज अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में जब स्वयं सही रास्ते से भटक गये थे और मोहनी से उनके जो संतानें हुईं। वे सब उनकी ही लापरवाही से सन्मार्ग से भटके थे। अतः उन्होंने सोचा ''अब तो प्रत्येक नया कदम सोच-समझ कर ही उठाना होगा।'' और उन्होंने ऐसा ही किया।

यह तो बहुत अच्छा हुआ, जो उन्होंने अपने शेष जीवन को सात्विकता से जिया; परन्तु वे अभी भी अतीन्द्रिय आनन्द की अनुभूति करने से वंचित ही हैं; क्योंकि अब तक उन्हें उस अतीन्द्रिय आत्मिक आनन्द पाने के लिए जिस अन्तर्मुखी उपयोग की आवश्यकता होती है, वह उपयोग जिन कारणों या साधनों से अन्तर्मुखी होता है, वे साधन उसके पास नहीं हैं।

अन्तर्मुखी उपयोग करने का एकमात्र उपाय **वस्तु स्वातंत्र्य की यथार्थ समझ और श्रद्धा ही है;** क्योंकि वस्तु स्वातंत्र्य के ज्ञान-श्रद्धान बिना अन्य के भले-बुरे करने का भाव निरन्तर बना रहता है।

हम अनादिकाल से अपनी मिथ्या मान्यता के कारण ऐसा मानते आ रहे हैं कि ''मैं दूसरों का भला-बुरा कर सकता हूँ, दूसरे भी मेरा भला-बुरा कर सकते हैं। इसकारण हम निरन्तर दूसरों का भला या बुरा करने तथा दूसरे हमारा बुरा न कर दें इस चिन्ता में आकुल-व्याकुल बने रहते हैं। और इनके कर्तृत्व के भार से निर्भार नहीं हो पाते।''

जब हम वस्तु-स्वातंत्र्य के सिद्धान्त के माध्यम से यह समझ लें कि न केवल प्रत्येक प्राणी; बल्कि पुद्गल के प्रत्येक परमाणु का परिणमन भी स्वाधीन है, किसी भी जीव के सुख-दुःख का कर्त्ता-हर्त्ता कोई अन्य नहीं है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु स्वतंत्र है, स्वाधीन है, स्वसंचालित है। तब हम इस कर्तृत्व के भार से निर्भार हो सकेंगे।

ऐसी जानकारी और श्रद्धा के बिना जीव पर के कर्तृत्व के भार से निर्भार नहीं हो सकते और निर्भार हुए बिना जीवों का उपयोग अन्तर्मुखी नहीं हो सकता तथा अन्तर्मुखी हुए बिना आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्द और निराकुल सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः सर्वप्रथम 'वस्तु स्वातंत्र्य' के इस नैसर्गिक नियम को जानना और उस पर विश्वास करना बहुत जरूरी है, जिसका ज्ञान व

(शेष पृष्ठ 5 पर ...)

सिद्धभक्ति

7 तृतीय पूजन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

तीसरी जयमाला के आरंभ में दो दोहे हैं; उनमें से पहला दोहा इसप्रकार है ह्न

(दोहा)

पंच परमपद ईश हैं, पंचमगति जगदीश।
जगतप्रपंच रहित बसे, नमूँ सिद्ध जग ईश ।।१।।

हे पंचमगति अर्थात् सिद्धदशा प्राप्त जगत के ईश्वर ! जगत के सभी प्रपंचों से रहित, स्वयं में वास करनेवाले जो ये पाँच परमपद हैं, परमेष्ठी पद हैं; वे सभी ईश्वरीय पद हैं; उन सभी, जगत के ईश्वर, सिद्ध भगवन्तों को मैं नमस्कार करता हूँ।

विगत दूसरी जयमाला के प्रथम दोहे में **पंच परम परमात्मा** कहकर पंचपरमेष्ठी को याद किया है और नीचे की पंक्ति में उन्हें **जगत के प्रपंचों से रहित** बताया है और इस तीसरी जयमाला के प्रथम दोहे की प्रथम पंक्ति में **पंच परमपद ईश** कहकर पंचपरमेष्ठी को याद किया है तथा दूसरी पंक्ति में **जगत के प्रपंचों से रहित** बताया गया है।

लगता है कवि संतलालजी के चित्त में पंचपरमेष्ठी इसप्रकार बसे हुए हैं कि वे सिद्धों को स्मरण करते समय पंचपरमेष्ठी को कभी नहीं भूलते। तथा वे पंचपरमेष्ठी जगत प्रपंचों से दूर रहते हैं ह्न यह भी बताते हैं।

लगता है कवि जगत प्रपंचों में उलझे उन लोगों से कुछ कहना चाहते हैं कि जो स्वयं को पंच परमेष्ठी में मानते हैं, पर...

कविवर सन्तलालजी की दृष्टि में दिगम्बर संतों का जगत के प्रपंचों में नहीं उलझना सबसे बड़ी क्वालिटी है और सन्तों का जगत के प्रपंचों में उलझना सबसे बड़ी डिस्क्वालिटी है।

तीसरी पंक्ति भी उक्त दोनों छन्दों में लगभग समान ही है। एक में हैह्न **नमो सिद्ध सुखकंद** और दूसरे में है ह्न **नमो सिद्ध जग ईश।**

दोनों छन्दों में सिद्धों को नमस्कार किया गया है। इसप्रकार दोनों छन्दों की तीन पंक्तियाँ तो लगभग समान ही हैं।

उक्त दोहों में जो विषयवस्तु प्रस्तुत की गई है; उससे प्रतीत होता है कि संत कवि के हृदय में सिद्ध भगवान के साथ-साथ पंचपरमेष्ठी भी तिल में तेल की भाँति व्याप्त हैं।

दूसरा दोहा इसप्रकार है ह्न

(दोहा)

परमब्रह्म परमातमा, परमज्योति शिवथान।
परमातम पद पाइयो, नमों सिद्ध भगवान ।।२।।

स्वभाव से ही परमज्योतिस्वरूप, मुक्ति में रहनेवाले हे परमब्रह्म परमात्मा ! आपने पर्याय में भी परमात्मपद प्राप्त कर लिया है; अत: सिद्धदशा को प्राप्त हे सिद्ध भगवान ! आपको मैं नमस्कार करता हूँ।

इस दोहे में मात्र यही कहा गया है कि हे सिद्ध भगवान ! आप स्वभाव से परमात्मा तो अनादि से ही थे, अब पर्याय में भी परमात्मा बन गये हैं। इसप्रकार द्रव्य और पर्याय ह्न दोनों ही दृष्टि से परमपद को प्राप्त हे सिद्ध परमात्मा ! आपको बारंबार नमस्कार हो।

यह तो आप जानते ही हैं कि परमात्मा दो प्रकार के होते हैं ह्न १. कारणपरमात्मा, २. कार्यपरमात्मा।

१. जिसमें अपनापन स्थापित करने का नाम सम्यग्दर्शन, जिसे जानने या निजरूप जानने का नाम सम्यग्ज्ञान है और जिसमें लीन होने का नाम सम्यक्चारित्र है; वह, पर और पर्याय से भिन्न, अनादि-अनन्त त्रिकाली ध्रुव निज भगवान आत्मा ही कारणपरमात्मा है।

२. अरहंत और सिद्धदशा प्राप्त आत्मा को कार्यपरमात्मा कहते हैं।

इसप्रकार यह सुनिश्चित हुआ कि कारणपरमात्मा तो प्रत्येक आत्मा है ही; पर कार्यपरमात्मा मात्र अरहंत और सिद्ध भगवान ही हैं।

इसप्रकार यह सहजसिद्ध ही है कि सिद्धदशा को प्राप्त जितने भी आत्मा हैं; वे सभी कारणपरमात्मा के साथ-साथ कार्यपरमात्मा भी हैं। इस छन्द में ऐसे सिद्ध भगवन्तों को ही नमस्कार किया गया है।

(क्रमश:)

(पृष्ठ 4 का शेष...)

श्रद्धान अभी तक जीवराज को नहीं हुआ। इसकारण अब तक वह सात्विक जीवन जीते हुए भी सच्चे सुख से वंचित ही रहा।

जीवन के उत्तरार्द्ध में भली होनहार से जब वह वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धांत की श्रद्धा के माध्यम से परकर्तृत्व के भार से निर्भार होकर अन्तर्मुखी हुआ और आत्मानुभूति के साथ सच्चे निराकुल सुख का स्वाद लेकर तृप्त हुआ तो उसके मन में बड़ी तेजी से यह विकल्प उठा कि ''मेरे बेटा-बेटी इस सुख से वंचित न रह जाँय। मैं उन्हें भी यह सब बता दूँ;'' परन्तु तब तक उसकी शारीरिक स्थिति बे-काबू हो गई। उसे अनायास लकवा लग गया। चाहते हुए भी वह अपनी संतान को उस अनुपम निधि की विधि नहीं बता पाया। इसलिए तो किसी ने कहा है ह्न

'काल करन्ता आज कर, आज करन्ता अब।
पल में परलय होयगा, बहुरि करेगा कब।।'

यद्यपि जीवराज लकवा की स्थिति में बोल नहीं सकता, लिख भी नहीं सकता था; परन्तु उसकी समझ यथावत थी, समझ में कोई अन्तर नहीं आया था, सोचने की शक्ति भी पूर्ववत थी, इस कारण जीवन के उत्तरार्द्ध में बीमारी के पूर्व उसे जो वस्तुस्वातंत्र्य का महामंत्र मिल गया था, उसके चिन्तन एवं अनुशीलन की आँच से उसने अपने जीवनभर के सम्पूर्ण कर्तृत्व के अहंकार को पिघला दिया। आधि-व्याधि एवं उपाधि का त्यागकर समाधि की साधना करते हुए अपना जीवन सार्थक करने में अग्रसर हो गया। ●

पंच परमेष्ठी विधान एवं शिलान्यास महोत्सव पत्रिका सोनागिर

पंच परमेष्ठी विधान एवं शिलान्यास महोत्सव पत्रिका सोनागिर

(पृष्ठ 1 का शेष...)

लाभ मिला।

पुणे (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा प्रातः दशलक्षण विधान के पश्चात् समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुए। साथ ही पण्डित सन्देशजी शास्त्री द्वारा बच्चों की कक्षा व सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। इसके अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित अनुभवजी जैन के प्रवचनों का भी लाभ मिला। **– सुरेन्द्र शाह**

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ चन्द्रप्रभ जिनालय में पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की विवेचना पण्डित अजितकुमारजी जैन फिरोजाबाद द्वारा की गई।

दिल्ली (आत्मसाधना केन्द्र) : यहाँ पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित मधुकरजी जलगांव, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल इत्यादि विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। स्थानीय विद्वान ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री द्वारा प्रातःकाल प्रवचन एवं विदुषी राजकुमारीजी जैन द्वारा प्रातः व दोपहर में कक्षायें ली गई। प्रातःकाल प्रवचनसार मण्डल विधान, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति, आत्मार्थी कन्याओं द्वारा प्रवचन एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि पर्व के अवसर पर इस वर्ष भी आत्मार्थी ट्रस्ट द्वारा दिल्ली व आसपास के उपनगरों में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा भेजे गये लगभग 60 से भी अधिक विद्वानों द्वारा 54 स्थानों पर धर्म प्रभावना की गई।

पर्व के पश्चात् आत्मसाधना केन्द्र में सामूहिक क्षमापना एवं विद्वत्सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता उद्योगपति श्री सुशीलकुमारजी सेठी ने की। सभी विद्वानों एवं विदुषियों का सम्मान श्री विमलकुमारजी जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा रचित **'नय रहस्य'** का विमोचन भी किया गया।

ध्रुवधाम-बांसवाड़ा : यहाँ खांदूकॉलोनी स्थित आदिनाथ चैत्यालय में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर द्वारा प्रातः समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। इनके प्रवचनों के पूर्व प्रातः श्री महिपालजी ज्ञायक एवं सायंकाल पण्डित सतीशचंदजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित आकाशजी डडूका, पण्डित संदीपजी डडूका व पण्डित चंदूभाई बांसवाड़ा के प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातः नित्यनियम पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में ध्रुवधाम के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अजमेर (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय एवं तीर्थधाम ऋषभायतन में पण्डित सुदीपजी जैन बीना द्वारा प्रातः मोक्षमार्ग प्रकाशक, समयसार, नियमसार व प्रवचनसार के आधार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। पूजन विधान व रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा व पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड द्वारा संपन्न कराये गये। प्रातःकाल के सभी कार्यक्रम सीमंधर जिनालय एवं रात्रि के कार्यक्रम तीर्थधाम ऋषभायतन में संपन्न हुये। **– प्रकाश पाण्ड्या**

मुम्बई (अन्धेरी) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रातः प्रवचनसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रातः दशलक्षण विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

सम्मेदशिखरजी (कहान नगर) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रातः मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

गजपंथा (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर द्वारा प्रातः समयसार, दोपहर में पुरुषार्थसिद्धयुपाय एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही स्थानीय विद्वान पण्डित धन्यकुमारजी बेलोकर द्वारा तीनों समय लघुजैनसिद्धांत प्रवेशिका पर कक्षा का लाभ मिला। प्रातः दशलक्षण विधान पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल द्वारा संपन्न कराया गया। इसके अतिरिक्त पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलामवाले तथा पण्डित गणेशजी वायकोस के भी व्याख्यान हुये।

अहमदाबाद (आशीष नगर) : यहाँ पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रातः पूजन के पश्चात् समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

भोपाल (चौक) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित सुनीलजी शास्त्री रामगढ द्वारा प्रातः समयसार की 47 शक्तियों, दोपहर में समयसार गाथा 206 पर एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर अनेक युवकों ने प्रतिदिन स्वाध्याय का नियम लिया।

पोस्टर मंगायें

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट के सहयोग से संचालित सर्वोदय अहिंसा अभियान में वीर निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर पटाखों के नुकसान दर्शाने वाले विशाल रंगीन पोस्टर एवं हैंडबिल उपलब्ध हैं। इन्हें मंगाने हेतु **संजय शास्त्री से, मोबा.- 09785999100** पर संपर्क करें।

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127